International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628
Received: 11-07-2026, Accepted: 11-08-2026, Published: 26-08-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 85-86

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में श्री अरविंद घोष की भूमिका

Dr. Indu Baghel
Associate Professor, Department of Political Science, Bharati College, New Delhi, India
DOI: https://doi.org/10.66856/ijssh.2026.8.3.8123

सारांश
श्री अरविंद घोष भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख राष्ट्रवादी चिंतक, क्रांतिकारी नेता और दार्शनिक थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के विचार को राजनीतिक मुक्ति के साथ–साथ राष्ट्रीय आत्मसम्मान, सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक विकास से जोड़ा। बंगाल विभाजन के बाद वे सक्रिय राजनीति में प्रमुख रूप से उभरे तथा स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा को राष्ट्रीय आंदोलन के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के रूप में स्थापित करने में योगदान दिया। उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता को भारत के राजनीतिक भविष्य का आवश्यक लक्ष्य माना और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध तथा राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता पर बल दिया। उनके लेखन और पत्रकारिता ने विशेष रूप से युवाओं में राष्ट्रीय चेतना, आत्मविश्वास और राष्ट्रभक्ति को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्रांतिकारी आंदोलन के संदर्भ में उन्होंने संगठन, जन–जागरण और राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए व्यापक संघर्ष की आवश्यकता पर बल दिया। अलीपुर बम कांड के बाद उनके चिंतन में महत्वपूर्ण आध्यात्मिक परिवर्तन आया और 1910 में उन्होंने सक्रिय राजनीति से दूरी बनाकर पांडिचेरी में आध्यात्मिक साधना का मार्ग अपनाया। बाद के चिंतन में उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता को मानव–एकता और विश्व समुदाय के व्यापक आदर्श से जोड़ा। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में श्री अरविंद का योगदान राजनीतिक राष्ट्रवाद, पूर्ण स्वतंत्रता, स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा, क्रांतिकारी चेतना और आध्यात्मिक मानवतावाद के समन्वय के रूप में देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, राष्ट्रवाद, पूर्ण स्वतंत्रता, स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा, क्रांतिकारी आंदोलन, आध्यात्मिक राष्ट्रवाद, मानव–एकता

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में श्री अरविंद घोष का स्थान एक ऐसे राष्ट्रवादी चिंतक, क्रांतिकारी नेता और दार्शनिक के रूप में है, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के विचार को व्यापक वैचारिक आधार प्रदान किया। वे केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि भारतीय पुनर्जागरण, राष्ट्रवाद और आध्यात्मिक चिंतन के महत्वपूर्ण प्रतिनिधि भी थे। उन्होंने भारतीय जनता में आत्मविश्वास, राष्ट्रीय गौरव और स्वतंत्रता की चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया।

श्री अरविंद का मानना था कि भारत की स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय आत्मसम्मान और मानवता के व्यापक विकास से जुड़ी हुई है। उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन माना। उनके लेखन और भाषणों ने विशेष रूप से युवाओं में राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया।

श्री अरविंद घोष का प्रारंभिक जीवन

श्री अरविंद घोष का जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा के बाद वे इंग्लैंड गए, जहाँ उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। इंग्लैंड में रहते हुए ही उनके भीतर भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने की भावना विकसित हुई। वे भारतीय विद्यार्थियों के विभिन्न राजनीतिक संगठनों के संपर्क में आए और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के विचार से प्रभावित हुए।

भारत लौटने के बाद उन्होंने बड़ौदा राज्य की सेवा में कार्य किया। उन्होंने विभिन्न प्रशासनिक तथा शैक्षणिक पदों पर कार्य किया और बाद में राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र से भी जुड़े। इसी अवधि में उनके राजनीतिक और क्रांतिकारी विचार अधिक स्पष्ट रूप से विकसित हुए। उन्होंने ब्रिटिश शासन की आलोचना करते हुए लेख लिखे और युवाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेश

1905 में बंगाल विभाजन के बाद श्री अरविंद सक्रिय राजनीति में अधिक प्रभावशाली रूप से सामने आए। 1906 में वे कलकत्ता चले गए और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को नई दिशा देने में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने कांग्रेस के भीतर उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा का समर्थन किया और बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय तथा बिपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं के साथ वैचारिक निकटता स्थापित की।

उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के चार प्रमुख कार्यक्रमों—स्वराज, स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षाकृपर विशेष बल दिया। उनके लेख 'बंदे मातरम', 'कर्मयोगिन' तथा अन्य पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम बने।

श्री अरविंद का राष्ट्रवाद

श्री अरविंद के राष्ट्रवाद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसका आध्यात्मिक स्वरूप था। उनके लिए राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि एक गहरी आध्यात्मिक भावना थी। वे राष्ट्र को केवल भौगोलिक क्षेत्र के रूप में नहीं देखते थे, बल्कि उसे एक जीवंत शक्ति के रूप में समझते थे।

उनका विश्वास था कि भारत की स्वतंत्रता के लिए भारतीयों में आत्मविश्वास और राष्ट्रीय गौरव का विकास आवश्यक है। वे ब्रिटिश शासन के साथ समझौते की अपेक्षा पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य के समर्थक थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता को भारतीय समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान से भी जोड़ा।

पूर्ण स्वतंत्रता की अवधारणा

श्री अरविंद घोष की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक देन पूर्ण स्वतंत्रता की अवधारणा थी। वे उन प्रारंभिक भारतीय नेताओं में थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन से पूर्ण और निरपेक्ष स्वतंत्रता की स्पष्ट मांग की।

उनके लिए राजनीतिक स्वतंत्रता राष्ट्र के विकास की पहली आवश्यकता थी। उनका विचार था कि राजनीतिक स्वतंत्रता के

बिना सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और प्रशासनिक सुधार भी प्रभावी रूप से संभव नहीं हो सकते। इस प्रकार उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लक्ष्य को सीमित सुधारों से आगे बढ़ाकर पूर्ण स्वतंत्रता की दिशा में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वदेशी और बहिष्कार का विचार

श्री अरविंद ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आर्थिक बहिष्कार और स्वदेशी को प्रभावी राजनीतिक साधन माना। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन को मजबूत बनाने वाली आर्थिक और प्रशासनिक व्यवस्थाओं से भारतीय जनता को स्वयं को अलग करना चाहिए।

उन्होंने बहिष्कार को केवल नकारात्मक कार्यक्रम नहीं माना, बल्कि इसके साथ वैकल्पिक राष्ट्रीय संस्थाओं के निर्माण की आवश्यकता पर भी बल दिया। आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी, शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा तथा न्याय के क्षेत्र में वैकल्पिक राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना उनके व्यापक कार्यक्रम का हिस्सा थी।

क्रांतिकारी आंदोलन में योगदान

श्री अरविंद का भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने युवाओं को संगठित करने और उनमें राष्ट्रीय भावना विकसित करने का प्रयास किया। वे क्रांतिकारी संगठनों से जुड़े तथा विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए संगठनात्मक आधार तैयार करने में सहयोग किया।

उनका मानना था कि केवल कुछ गुप्त क्रांतिकारी गतिविधियाँ पर्याप्त नहीं होंगी; उन्हें व्यापक जन–आंदोलन का समर्थन प्राप्त होना आवश्यक है। इस दृष्टि से उनके राजनीतिक चिंतन में क्रांतिकारी गतिविधियों और जन–जागरण दोनों का महत्व था।

अलीपुर बम कांड और राजनीतिक जीवन से दूरी

मई 1908 में श्री अरविंद को प्रसिद्ध अलीपुर बम कांड में गिरफ्तार किया गया। लगभग एक वर्ष के कारावास के दौरान उनके चिंतन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। जेल में रहते हुए उनके भीतर आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन अधिक गहरा हुआ।

1909 में रिहाई के बाद उन्होंने 'कर्मयोगिन' और 'धर्म' जैसे प्रकाशनों के माध्यम से अपने विचारों को आगे बढ़ाया। 1910 में उन्होंने सक्रिय राजनीति से दूरी बनाई और पांडिचेरी चले गए। वहाँ उन्होंने अपने जीवन को आध्यात्मिक साधना और योग के लिए समर्पित किया तथा आगे चलकर समग्र योग की अवधारणा को विकसित किया।

राष्ट्रवाद से मानवतावाद की ओर

श्री अरविंद का राष्ट्रवाद संकीर्ण राष्ट्रवाद नहीं था। वे भारतीय स्वतंत्रता को मानवता के व्यापक हित से जोड़ते थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्र भारत विश्व समुदाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है और मानव–एकता की स्थापना में योगदान दे सकता है।

उनकी दृष्टि में राष्ट्रवाद का अंतिम उद्देश्य केवल एक राष्ट्र को स्वतंत्र कराना नहीं, बल्कि स्वतंत्र और समान मनुष्यों पर आधारित व्यापक मानव–समुदाय की स्थापना की दिशा में आगे बढ़ना था। इस प्रकार उनके राजनीतिक चिंतन में राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीय मानवतावाद के बीच एक गहरा संबंध दिखाई देता है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में श्री अरविंद का योगदान

श्री अरविंद के योगदान को निम्नलिखित रूपों में समझा जा सकता है—

1. **पूर्ण स्वतंत्रता का समर्थन:** उन्होंने ब्रिटिश शासन से पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता को राष्ट्रीय आंदोलन का प्रमुख लक्ष्य बनाया।
2. **आध्यात्मिक राष्ट्रवाद:** उन्होंने राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक चेतना और राष्ट्रीय आत्मसम्मान से जोड़ा।
3. **स्वदेशी और बहिष्कार:** उन्होंने ब्रिटिश आर्थिक व्यवस्था के विरोध में स्वदेशी और बहिष्कार को प्रभावी राजनीतिक साधन बनाया।
4. **राष्ट्रीय शिक्षा:** उन्होंने ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया जो भारतीय राष्ट्रीय चेतना को विकसित करे।
5. **युवा शक्ति का जागरण:** उन्होंने युवाओं में साहस, आत्मविश्वास और राष्ट्रभक्ति की भावना विकसित करने का प्रयास किया।
6. **क्रांतिकारी आंदोलन को वैचारिक आधार:** उन्होंने प्रारंभिक क्रांतिकारी गतिविधियों को संगठनात्मक और वैचारिक दिशा देने में योगदान किया।
7. **मानव–एकता की अवधारणा:** उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता को अंततः विश्व–मानवता और मानव–एकता के व्यापक आदर्श से जोड़ा।

निष्कर्ष

श्री अरविंद घोष भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उन महत्वपूर्ण विचारकों में थे जिन्होंने स्वतंत्रता के विचार को राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया। उन्होंने भारतीय जनता में राष्ट्रीय आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की आकांक्षा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनका राष्ट्रवाद केवल ब्रिटिश शासन के विरोध तक सीमित नहीं था। वे स्वतंत्र भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे जो अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शक्ति के आधार पर विश्व मानवता के विकास में योगदान दे। उनकी पूर्ण स्वतंत्रता, स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और मानव–एकता की अवधारणाएँ भारतीय राजनीतिक चिंतन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

इस प्रकार श्री अरविंद घोष का योगदान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में बहुआयामी है। वे एक क्रांतिकारी राष्ट्रवादी से आगे बढ़कर ऐसे चिंतक बने जिनके लिए भारत की स्वतंत्रता मानव–मुक्ति और विश्व–एकता की व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा थी।

संदर्भ ग्रंथ

1. Aurobindo Sri. The Foundations of Indian Culture- Sri Aurobindo Library, New York, 1953.
2. Sarkar Jadunath. India Through the Ages: A Survey of the Growth of Indian Life and Thought. 1960.
3. Majumdar R C. British Parliamentary and Indian Renaissance. Bharatiya Vidya Bhavan, Delhi, 1963.
4. Panikkar K M. The Foundations of New India. George Allen and Unwin, London, 1963.
5. Sarkar Susobhan. On the Bengal Renaissance- Papyrus, Calcutta, 1979.
6. Mehta V R. Foundations of Indian Political Thought: An Interpretation. Manohar Publishers, New Delhi, 2008.
7. Chakraborty B, R K Pandey. Modern Indian Political Thought: Text and Context. Sage Publications, 2009.
8. Desai A R. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि. ैहम च्नइसपबंजपवदे, 2018.